

नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विवि, अयोध्या के वीसी बने डॉ. बिजेन्द्र सिंह



कानपुर, 19 मई। राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने उत्तर प्रदेश एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अधिनियम 1958 की धारा-11 (1) के अन्तर्गत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए डा. बिजेन्द्र सिंह को कुलपति नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या को कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष की अवधि के लिए नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज अयोध्या का कुलपति नियुक्त किया है।

हरी खाद बढ़ाएगी फसलों की पैदावार

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर में आयोजित बैठक में किसानों को हरी खाद के बारे में जानकारी दी गई। वैज्ञानिकों ने कहा कि हरी खाद से फसलों की पैदावार बढ़ाई जा सकती है। इसमें किसी तरह के रासायनिक उर्वरक डालने की आवश्यकता नहीं होती है। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि ढेंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार व बरसीम ऐसी फसलें हैं, जिनसे हरी खाद बनाई जाती है। वैज्ञानिकों ने किसानों को हरी खाद बनाने की विधि भी बताई। हरी खाद से मिट्टी में वायु और जल धारण क्षमता में वृद्धि, अम्लीयता व क्षारीयता में सुधार होता है। वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत, डॉ. राजेश राय ने भी जानकारी दी। (ब्यूरो)

हरी खाद से बढ़ाएं भूमि की उर्वरकता

कानपुर। हरी खाद से मिट्टी को स्वस्थ रखने के साथ फसलों की पैदावार बढ़ाई जा सकती है। हरी खाद से मिट्टी को जरूरी सभी पोषक तत्व मिल जाते हैं और किसी तरह के रसायन की आवश्यकता नहीं होती है। यह बात सीएसए के वैज्ञानिकों ने कही। उन्होंने गांव में जाकर किसानों को जागरूक किया और लाभ बताया।

कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर से जुड़े गांवों में जाकर मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि ढेंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार व बरसीम ऐसी फसलें हैं, जिनसे हरी खाद बनाई जाती है। वैज्ञानिकों ने किसानों को हरी खाद बनाने की विधि भी बताई। वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत, डॉ. राजेश राय ने भी जानकारी दी।

राष्ट्रीय स्वरूप

aswaroop.in

विराट की तरह बड़ी पारी में तब्दील करने की कला सीख रहे हैं यशस्वी: सहवाग 10

किसानों को प्रशिक्षण के जरिए हरी खाद के प्रयोग पर दिया बल

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने किसानों को प्रशिक्षण के माध्यम से हरी खाद प्रयोग पर बल दिया गया। यह प्रशिक्षण ग्राम बहालपुर विकास खंड मैथा में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा की किसान भाइयों को मृदा की उपजाऊ शक्ति बनाए रखने के लिए हरी खाद एक सबसे सस्ता विकल्प है। उन्होंने किसान भाइयों को हरी खाद बनाने के लिए अनुकूल फसलों के बारे में बताया कि ढेंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार, एवं बरसीम मुख्य फसलें हैं जो हरी खाद बनाने में प्रयोग की जाती हैं। डॉ खान ने बताया कि ढेंचा की मुख्य किस्में सस्बेनिया अजिप्टिका सस्बेनिया रोस्ट्रेटा, सस्बेनिया अकुलेता अपने त्वरित खनिजिकरण पैटर्न उच्च नाइट्रोजन मात्रा के कारण बाद में बोई गई मुख्य फसल की उत्पादकता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सक्षम है। हरी

खाद बनाने की विधि के बारे में उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि माह मई में गेहूं की कटाई के बाद खेत की सिंचाई कर दें। खेत में खड़े पानी में 30 से 35

अवस्था पर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया को खेत में फैला देते हैं। जिससे जड़ ग्रंथियां बनने में सहायता मिलती है। ढेंचा की 40 से 45 दिन की

अवस्था में हल चलाकर हरी खाद को खेत में मिला दिया जाता है। इस तरह लगभग 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से हरी खाद उपलब्ध हो जाती है। इस अवसर पर पशु पालन वैज्ञानिक डॉ शशिकांत, वैज्ञानिक डॉ राजेश राय, कृषि छात्र गौरव शुक्ला, प्रगति शील कृषक सुशील वर्मा, लाल सिंह, किशन लाल एवं जगदीश सहित एक सैकड़ा से अधिक किसान उपस्थित रहे।



किलोग्राम ढेंचा का बीज प्रति हेक्टेयर की दर से फैला दें। तथा जरूरत पड़ने पर 15 से 20 दिन में ढेंचा फसल की हल्की सिंचाई कर दें। इसके साथ ही 20 दिन की

अवस्था पर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया को खेत में फैला देते हैं। जिससे जड़ ग्रंथियां बनने में सहायता मिलती है। ढेंचा की 40 से 45 दिन की

कानपुर: हरी खाद का उपयोग कर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं किसान भाई: कुलपति

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिनांक 19 मई 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को प्रशिक्षण के माध्यम से हरी खाद प्रयोग पर बल दिया गया। यह प्रशिक्षण ग्राम बहालपुर विकास खंड मैथा में किया गया इस अवसर पर उन्होंने कहा की किसान भाइयों को मृदा की उपजाऊ शक्ति बनाए रखने के लिए हरी खाद एक सबसे सस्ता विकल्प है। उन्होंने किसान भाइयों को हरी खाद बनाने के लिए अनुकूल फसलों के बारे में बताया कि ढैंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार, एवं बरसीम मुख्य फसलें हैं जो हरी खाद बनाने में प्रयोग की जाती हैं। डॉ. खान ने बताया कि ढैंचा की मुख्य किस्में सस्वेनिया अजिप्ठिका, सस्वेनिया रोस्ट्रेटा, सस्वेनिया अकुलेता अपने त्वरित खनिजिकरण पैटर्न, उच्च नाइट्रोजन मात्रा के कारण बाद में बोई गई मुख्य फसल की उत्पादकता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सक्षम है।

हरी खाद बनाने की विधि के बारे में उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि माह मई में गेहूं की कटाई के बाद खेत की सिंचाई कर दें। खेत में खड़े पानी में 30 से 35 किलोग्राम ढैंचा का बीज प्रति हेक्टेयर की दर से फैला दें। तथा जरूरत पड़ने पर 15 से 20 दिन में ढैंचा फसल की हल्की सिंचाई कर दें। इसके साथ ही 20 दिन की अवस्था पर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया को खेत में फैला देते हैं। जिससे



जड़ ग्रंथियां बनने में सहायता मिलती है ढैंचा की 40 से 45 दिन की अवस्था में हल चलाकर हरी खाद को खेत में मिला दिया जाता है इस तरह लगभग 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से हरी खाद उपलब्ध हो जाती है। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने किसान भाइयों को हरी खाद के लाभ एवं पोषक तत्वों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि हरी खाद केवल नत्रजन व कार्बनिक पदार्थों का

ही साधन नहीं है बल्कि इससे मिट्टी में कई पोषक तत्व उपलब्ध होते हैं।

डॉक्टर खान ने बताया कि इसके अतिरिक्त हरी खाद के प्रयोग से मृदा भुरभुरी, वायु संचार अच्छा, जल धारण क्षमता में वृद्धि, अम्लीयता/छारीयता में सुधार एवं मृदा क्षरण भी कम होता है। हरी खाद के प्रयोग से मृदा में सूक्ष्मजीवों की संख्या एवं क्रियाशीलता बढ़ती है तथा मृदा की उर्वरा शक्ति एवं उत्पादन क्षमता भी बढ़ता है। इसके प्रयोग से

रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम कर बचत कर सकते हैं तथा टिकाऊ खेती भी कर सकते हैं। इस अवसर पर पशु पालन वैज्ञानिक डॉ. शशिकांत, वैज्ञानिक डॉ. राजेश राय, कृषि छात्र गौरव शुक्ला, प्रगति शील कृषक सुशील वर्मा, लाल सिंह, किशन लाल एवं जगदीश सहित एक सैकड़ से अधिक किसान उपस्थित रहे। एक अध्ययन के अनुसार 1 टन ढैंचा के शुष्क पदार्थ द्वारा मृदा में जुटाए जाने वाले पोषक तत्व इस प्रकार हैं।

पोषक तत्व	मात्रा	किग्रा./ टन
शुष्क पदार्थ		
नत्रजन	26.2	
फास्फोरस	7.3	
पोटाश	17.8	
गंधक	1.9	
कैल्शियम	1.4	
मैग्नीशियम	1.6	
जस्ता	25 पीपीएम	
लोहा	105 पीपीएम	
तांबा	7 पीपीएम	

दैनिक

RNI N.UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़.....

हरी खाद का उपयोग कर भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं किसान भाई

➔ प्रशिक्षण के माध्यम से किया जागरूक

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेन्द्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज दिनांक 19 मई 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को प्रशिक्षण के माध्यम से हरी खाद प्रयोग पर बल दिया गया। यह प्रशिक्षण ग्राम बहालपुर विकास खंड मैथा में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा की किसान भाइयों को मृदा की उपजाऊ शक्ति

बनाए रखने के लिए हरी खाद एक सबसे सस्ता विकल्प है। उन्होंने किसान भाइयों को हरी खाद बनाने के लिए अनुकूल फसलों के बारे में बताया कि ढ़ेंचा, लोबिया, उड़द, मूंग, ग्वार, एवं बरसीम मुख्य फसलें हैं जो हरी खाद बनाने में प्रयोग की जाती हैं। डॉ. खान ने बताया कि ढ़ेंचा की मुख्य किस्में सस्बेनिया अजिष्टिका, सस्बेनिया रोस्ट्रेटा, सस्बेनिया अकुलेता अपने त्वरित खनिजिकरण पैटर्न, उच्च नाइट्रोजन मात्रा के कारण बाद

में बोई गई मुख्य फसल की उत्पादकता पर उल्लेखनीय प्रभाव डालने में सक्षम है।

हरी खाद बनाने की विधि के बारे में उन्होंने किसान भाइयों को बताया कि माह मई में गेहूं की कटाई के बाद खेत की सिंचाई कर दें। खेत में खड़े पानी में 30 से 35 किलोग्राम ढ़ेंचा का बीज प्रति हेक्टेयर



की दर से फैला दें। तथा जरूरत पड़ने पर 15 से 20 दिन में ढ़ेंचा फसल की हल्की सिंचाई कर दें। इसके साथ ही 20 दिन की अवस्था पर 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से यूरिया को खेत में फैला देते हैं। जिससे जड़ ग्रंथियां बनने में सहायता मिलती है। ढ़ेंचा की 40 से 45 दिन की अवस्था में हल चलाकर हरी खाद को खेत में मिला दिया जाता है। इस तरह लगभग 15 से 20 टन प्रति हेक्टेयर की दर से हरी खाद उपलब्ध हो जाती है।